International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 10, Oct 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पूर्वी उत्तर प्रदेश में महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन

पूजा मिश्रा, शोध–छात्रा, सनराइज वि"वविद्यालय अलवर, राजस्थान

सारांश

सशक्तिकरण को सामाजिक वातावरण बनाने का एक साधन माना जाता है जिसमें महत्वपूर्ण निर्णय लिए जा सकते हैं और सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए चुनाव किए जा सकते हैं। यह ज्ञान, शक्ति और अनुभव प्राप्त करके जन्मजात क्षमता को मजबूत करता है। महिलाओं का सशक्तिकरण वर्तमान समय के महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक बन गया है। यह माना जाता है कि महिलाओं को शिक्षा, आजीविका, स्वास्थ्य और अन्य सभी मानकों पर पुरुषों के बराबर खड़ा होना चाहिए। महिलाओं की शिक्षा समाज की उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पंडित जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में, ष्यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, हालाँकि, यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं। एक नारी को शिक्षित करने का अर्थ एक परिवार को शिक्षित करना है। वर्तमान युग को वैचारिकता का युग कहा जा सकता है। अगर स्त्रीया माता अथवा गृहिणी के संस्कार, शिक्षा–दीक्षा आदि उत्तम नहीं होगी तो यह समाज और राष्ट्र को श्रेष्ठ सदस्य कैसे दे सकती है? समाज के लिए स्त्री का स्वस्थ, खुशहाल, शिक्षित, समझदार, व्यवहार कुशल, बुद्धिमान होना जरूरी है और शिक्षा से ही सम्भव है। महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिला द्वारा शक्ति और संसाधनों की प्राप्ति से है जिससे कि वे अपने विषय में महत्वूपर्ण निर्णय स्वयं ले सके एवं दूसरों के द्वारा लिए गए गलत निर्णयों का विरोध कर सके। शिक्षा महिला सशक्तिकरण के लिए प्रथम और मूलभूत साधन है। प्रस्तुत लेख में महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की क्या भूमिका है तथा महिला शिक्षा के मार्ग में जो बाधाएँ है उनको दर्शाने का प्रयत्न किया गया है।

मूलशब्द– स"ाक्तिकरण, सहसंबंध, मूलभूत, प्रजातान्त्रिक, f"ाक्षित संसाधन

प्रस्तावनाः शिक्षा सामाजिक सशक्तिकरण के लिए प्रथम एवं मूलभूत साधन है। यह माना जाता है कि शिक्षा ही वह उपकरण है जिससे महिला समाज में अपनी सशक्त, समान व उपयोगी भूमिका की अनुभूति करा सकती है। शिक्षा के आधार पर महिला में दक्षता, कौशल, ज्ञान एवं क्षमताओं का विकास होता है। शिक्षित महिला न केवल स्वयं लाभान्वित होती है, वरन उससे भावी पीढ़ी भी लाभान्वित होती है। शिक्षा किसी भी प्रकार के कौशल की प्राप्ति एवं विवेकपूर्ण दृष्टिकोण के विकास के लिए पूर्णतया आवश्यक है। महिला की शिक्षा से उसका शोषण रोकने में सहायता मिलेगी। निर्णय लेने की क्षमता सशक्तिकरण का एक बड़ा मानक है[1]।

सशक्तिकरण व्यक्ति को स्वायत्त रूप से सोचने, कार्य करने और कार्य को नियंत्रित करने में सक्षम या अधिकृत करने की प्रक्रिया है[2]। यह किसी भी प्रकार के उत्पीड़न या बंधन से मुक्ति को संदर्भित करता है। यह वर्षों तक चलने वाले बंधन से मुक्ति भी सुनिश्चित करता है। यह सामाजिक और आर्थिक संबंधों की पूरी श्रृंखला के पुनर्गठन की मांग करता है। इसमें व्यक्ति को बाहरी ताकतों द्वारा थोपी गई 'स्व' की समझ से मुक्त करना शामिल हैं[3]। सशक्तिकरण, मुक्ति की एक भव्य घटना से कम, दासता और नस्लीय अधीनता के तरीकों के बीच संक्रमण के बिंदु के रूप में प्रतीत होता है। इसे निर्णय लेने में स्वायत्तता भी कहा जाता है[4]।

सशक्तिकरण शक्ति के एक आलोचनात्मक विश्लेषण से संबंधित है जो प्रतिरोध उत्पन्न कर सकता है जिसके माध्यम से मौजूदा शक्ति प्रणालियों को उलट दिया जा सकता है। यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने भाग्य और जीवन की परिस्थितियों पर नियंत्रण प्राप्त कर सकता है[5]। यह न केवल मानव संसाधनों के विकास में सहायता करता है बल्कि जीवन की गुणवत्ता में सुधार भी करता है। यहाँ शिक्षा सशक्तिकरण लाने के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है। यह चीजों को देखने का एक नया आयाम प्रदान करती है। महात्मा ज्योतिबा फुले के अनुसार, ''शिक्षा वह है जो अच्छे और बुरे के बीच अंतर को प्रदर्शित करती है[6]।'' यह कई दृष्टिकोणगत परिवर्तन ला सकती है जो देश की सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक प्रगति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षा चेतना की प्रक्रिया को सुगम बनाती है जिसके माध्यम से मनुष्य स्वयं का आत्मनिरीक्षण कर सकते हैं। सामान्य अर्थ में शिक्षा सीखने का एक रूप है जिसमें लोगों के एक समूह के ज्ञान, कौशल और आदतों को स्थानांतरित किया जाता है।[7,8] शिक्षा महिलाओं को उनके अधिकारों और आर्थिक व सामाजिक भेदभाव से लड़ने की शक्ति के बारे में समझ प्रदान करती है। यह समृद्धि, विकास और कल्याण की कुंजी है।[9] एक शिक्षित महिला एक प्रतिस्पर्धी दुनिया में परिवार के विकास के लिए एक बुनियादी ढाँचा प्रदान करती

है। अध्ययनों से पता चलता है कि वह बेहतर, शिक्षित और स्वस्थ बच्चों को जन्म देती है और इस प्रकार सूक्ष्म अर्थव्यवस्था यानी घर में सामाजिक और आर्थिक उत्पादकता लाती है।[10]

पूर्वी उत्तर प्रदेश के संदर्भ में, महिला सशक्तिकरण का अर्थ केवल आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करना नहीं है, बल्कि निर्णय लेने की क्षमता, अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच और सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्रों में समान भागीदारी सुनिश्चित करना है। शिक्षा किस प्रकार महिलाओं में आत्मविश्वास जगाती है और उन्हें अपने भाग्य का निर्माता बनने में सक्षम बनाती है, जिससे अंततः पूरे समाज और क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है।[11]

केन्द्र सरकार ने बालिका शिक्षा और बालिका सशक्तिकरण को लेकर हाल में अनेक योजनाएं शुरू की है। इन योजनाओं के क्रियान्वयन से निश्चित रूप से बालिकाओं को हौसला मिल रहा हैं। इसमें प्रमुख रूप से बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं योजना है जिसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सराहा गया है। 100 करोड़ रूपये के शुरुआती कोष के साथ यह योजना शुरू में देशभर के सौ जिलों में शुरू की गयी। खासकर उन जिलों में जहाँ लिंगानुपात बेहद कम था। बाद में इसका विस्तार 61 अन्य जिलों में भी किया गया है। इस योजना के तारतम्य में हर लड़की के लिए पैसे बचाने की और लघु बचत योजना सुकन्या समृद्धि अकाउट योजना शुरू की।[12] बच्चियों को उच्च शिक्षा के लिए आवश्यकता होने पर धन की उपलब्धता जैसे छोटे लेकिन महत्वपूर्ण लक्ष्यों के साथ ही घरेलू बचत का प्रतिशत बढ़ाने के लिए यह पहल की गयी। यह योजना माता पिता को अपनी लड़की की बेहतर शिक्षा और भविष्य के लिए पैसे बचाने के लिए प्रोत्साहित करती है।

पूर्वाध्ययनः

श्रीमती विमला मेहता[13] ने "एटीट्यूड ऑफ एजूकेटेड वीमेन टूवार्ड्स सोशल इश्यू" में शिक्षित महिलाओं तथा आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर महिलाओं के सामाजिक मुद्दों के सम्बन्ध में परिवर्तित दृष्टि का आकलन किया गया। इन महिलाओं ने जाति, समुदाय से परे एक व्यापक दृष्टिकोण का परिचय दिया तथा भौतिक उपलब्धियों के स्थान पर सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक समृद्धि प्राप्त करने पर अधिक बल दिया। "भारतीय नारी की दिशा एवं दशा" में नारी आन्दोलन पर एक महत्वपूर्ण प्रतिभाग प्रस्तुत करता है। भारतीय महिलाओं की जो उपलब्धियाँ रही हैं उनका विशेष रूप से वर्णन किया गया है।[14] "महिला विकास के कार्यक्रम" में देश की लगभग 50 प्रतिशत आबादी की महिलाओं के विकास के विभिन्न कार्यक्रमों की व्याख्या की गई है। 1975 को

अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में मनाये जाने के कारण विश्व मंच पर महिला सम्बन्धी समस्याओं व मुद्दों की इस पुस्तक में विवेचना की गई है।[15] महिलाएँ पहले से कहीं अधिक जागरूक हैं और उनमें अपने आपको बदलने की चिंगारी फूट चुकी है। अपने अधिकारों की इस पहचान व जागरूकता को नारी समानता की यात्रा की पहल माना जाये तो भारतीय महिला वहाँ तक पहुँच चुकी है।[16]

महिलाओं की सामाजिक स्थिति को प्रगति”ाील बनाने में सक्षम है से नारी अपने अस्तित्व अपने स्व की पहचान बना सकेगी। वर्तमान समाज की आवश्यकता है समाज की मानसिकता, विशेषतः स्वयं महिलाओं की मानसिकता में परिवर्तन लाया जाए।[17] डॉ0 सुनील गोयल एवं सुनीता गोयल[18] ने अपनी लेख के अन्तर्गत भारतीय समाज में नारी की गौरवमयी यात्रा, भारत में पंचायत प्रशासन एवं महिलाएँ, महिला शिक्षा ओर ग्रामीण विकास, भारतीय महिलाएँ और कानूनी संरक्षण, महिलाओं का स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान, भारत में महिलाओं का राजनीतिक विकास, भारतीय संस्कृति एवं आधुनिक महिला, शिक्षित कार्यशील महिला एवं पारिवारिक दायित्व आदि को भारतीय नारी से संबंधित जटिल विषयों के उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट प्रस्तुत किया गया है।

महिला उत्पीड़न, शोषण और दमन से सम्बन्धित हुए व्याख्या डा0 जो”ाी[19] ने किया है इन्होनें स्त्री असमानता का बोध, स्त्री असमानता के पोषण में धर्मों की भूमिका पर निर्भर है। डॉ0 रंजना मिश्रा[20] ने भारतीय महिलाओं विभिन्न समस्याओं, अधिकारों, राजनीतिक क्रियाशीलता, संवैधनिक, वैधानिक प्रावधनों, विकास, घरेलू हिंसा, मुस्लिम महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण किया है। महिलाएँ जब कोई जिम्मेदारी संभालती ये है तो संकल्प को सिद्धि तक ले जाने के लिए वह जी–जान से जुट जाती है[21]।

महिलाओं के इसी कौशल का, उनके नेतृत्व का लाभ आने वाले दिनों में देश को होने वाला है। संसद में भी नारी शक्ति का महत्व दिखा है। भारत के सभी राजनीतिक दलों को इस अध्यादेश का समथर्न करना पड़ा है। आज परिवार से लेकर पंचायत तक, अर्थ व्यवस्था से लेकर शिक्षा और उद्यम तक, नारी शक्ति हर क्षेत्र में अभूतपूर्व काम कर रही हैं।[22] भारत को चांद तक पहुंचाने में महिलाओं की बहुत बड़ी भूमिका रही है। समग्र राष्ट्रीय विकास के परिप्रेक्ष्य में जिन आधारभूत विषयों पर विचार किए जाने की नितान्त आवश्यकता है, उनमें महिला सशक्तिकरण का मुद्दा सम्भवतः सर्वोपरि है[23]। महिला सशक्तिकरण में शिक्षा और रोजगार की भूमिका'' एक नीतिगत परिप्रेक्ष्यः के अंतर्गत महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा और रोजगार

की महत्वपूर्ण भूमिका का विश्लेषण करता है। सरकार द्वारा लागू की गई योजनाएं जैसे "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ", "मुद्रा योजना" और स्टैंड–अप इंडिया" महिलाओं को शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में समान अवसर प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुई हैं।[24,25]

सारथी कुमारी[26] के अनुसार ''एक नारी को शिक्षित करने का अर्थ एक परिवार को शिक्षित करना है।'' वर्तमान युग को वैचारिकता का युग कहा जा सकता है। अगर स्त्री या माता अथवा गृहिणी के संस्कार शिक्षा–दीक्षा आदि उत्तम नहीं होगी तो वह समाज और राष्ट्र को श्रेष्ठ सदस्य देना संभव नही है। समाज के लिए स्त्री का स्वस्थ, खुशहाल, शिक्षित, समझदार, व्यवहार कुशल, बुद्धिमान होना जरूरी है और वह शिक्षा से ही सम्भव है[27]। समाज के लिए स्त्री का स्वस्थ, खुशहाल, शिक्षित, समझदार, व्यवहार कुशल, बुद्धिमान होना जरूरी है और यह शिक्षा से ही सम्भव है।[28] आजादी के 79 वर्ष पूरे हो गए हैं लेकिन इन 78 वर्षों में महिलाओं में साक्षरता की दर में भले वृद्धि हो गई हो, उन्हें आर्थिक स्वांवलम्बन भी प्राप्त हो गया हो, किन्तु समाज आज भी उन्हें दोयम दर्जे की नजर से देखता है। जब किसी समाज में जहाँ पुरूष और महिला में भेदभाव किया जाता है, वहॉ प्रगति नही हो सकती है।[29]

महिलांए पुरूषों से हर कार्य में बेहतर है, इसलिए महिला स"ाक्तिकरण की सोच न केवल महिलाओं की ताकत और कौ"ाल को उनके दुखदायी स्थिति से ऊपर उठाने पर केंद्रित करती है साथ ही यह पुरूषों को महिलाओं के संबंध में f"ाक्षित करने और महिलाओं के प्रति बराबरी के साथ सम्मान और कर्तव्य की भावना पैदा करने की आव"यकता पर जोर देती है।[30,31] महिलाओं के लिए संविधान में कई कानून का प्रावधान दिया गया है और साथ ही साथ भारतीय सरकारों द्वारा कई योजनाएँ बनाई गयी है। जिसे उपयोग में लाकर भारतीय महिलाएँ अपने आत्म–सम्मान में वृद्धि कर रही है।[32] डॉ0 गायत्री कुमारी[33] ने बताया कि महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत महिलाओं से जुड़े सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और कानूनी मुद्दों पर संवेदनशील और सरोकार व्यक्त किया जाता है सशक्तिकरण की प्रक्रिया में समाज को पारस्परिक पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण के प्रति जागरूक किया जाता है जिसने महिलाओं की स्थिति को सदैव कमतर माना है।

अध्ययन क्षेत्रः पूर्वी उत्तर प्रदेश के वाराणसी, जौनपुर, चंदौली और भदोही जिलों में महिलाओं की वर्तमान स्थिति मिश्रित है। वाराणसी जनपद की कुल जनसंख्या 3,676,841 है जिसमें महिलाओं की जनसंख्या 1,754,984 है और महिला साक्षरता 66.69 प्रति"ात है। जौनपुर जनपद की कुल जनसंख्या 44,94,204 है जिसमें महिलाओं की जनसंख्या 22,73,739 है और महिला

साक्षरता 61.7 प्रति"ात है। चंदौली जनपद की कुल जनसंख्या 19,52,756 है जिसमें महिलाओं की जनसंख्या 9,34,851 है और साक्षरता 60.35 प्रति"ात है एवं भदोही जनपद की कुल जनसंख्या 15,78,213 है जिसमें महिलाओं की जनसंख्या 7,71,114 है। जिसमें महिला साक्षरता 56.03 प्रति"ात है।

अध्ययन के उद्देश्य:

- महिला सशक्तिकरण के मूल सिद्धांतों को समझना।
- महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक स्थिति को मजबूत करने में शिक्षा की भूमिका की व्याख्या करना।
- शैक्षिक पहलों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के प्रकारों पर प्रकाश डालना।
- महिलाओं को सशक्त बनाने में शिक्षा की क्या भूमिका रही।
- क्या समाज में महिलाओं को पुरूषों के बराबर अधिकार प्राप्त है।
- क्या आज की शिक्षा पद्धति अर्थात् महिलाओं का शिक्षा के प्रति जागरूकता उन्हें सशक्तिकरण की ओर बढ़ावा दे रहा है।

शोध पद्धति:

शोध पद्धतियाँ शोध की समस्या के व्यवस्थित अध्ययन हेतु आवश्यक होती है। शोध की वैज्ञानिकता व प्रासंगिकता शोध पद्धतियों द्वारा ही निश्चित होती हैं। प्रस्तुत शोध में सैद्धान्तिक तथा आनुभाविक प्रविधि का अनुगमन किया जायेगा। सैद्धान्तिक अध्ययन प्रविधि के अन्तर्गत द्वितीयक स्रोत उपयोग में लिए जायेंगे, जिनके अन्तर्गत महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक और प्रशासनिक स्थिति से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण कर प्रस्तुत किया जायेगा तथा महिलाओं के राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं प्रशासनिक सशक्तीकरण के विषय में उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण किया जायेगा। आनुभाविक एवं व्यावहारिक अध्ययन हेतु प्राथमिक स्रोतों के माध्यम से अध्ययन किया जायेगा जिसमें जौनपुर जिले में प्रश्नावलियाँ भरवाकर तथा साक्षात्कार करके महिलाओं की वास्तविक स्थिति का विश्लेषण किया जायेगा। आगमनात्मक पद्धति का उपयोग महिला सशक्तीकरण के सम्बन्ध में विभिन्न उपलब्ध तथ्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए ऐसी सामान्य कार्यनीतियों का निर्माण करने में किया जायेगा जो समस्या के समाधान के लिए उपयोगी एवं प्रासंगिक होगी। ऐतिहासिक विश्लेषण को उपयोगी मानते हुए

प्रस्तुत शोध के व्यवस्थित अध्ययन के लिए ऐतिहासिक पद्धति का उपयोग करते हुए उपलब्ध साहित्य के आधार पर विभिन्न निष्कर्षों तक पहुँचना संभव होगा, जिनमें भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों दृष्टिकोणों का विश्लेषण सम्मिलित है। तुलनात्मक विश्लेषण के आधार पर ग्रामीण, शहरी, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, शिक्षित, अशिक्षित, प्राचीन, अर्वाचीन आदि आधारों पर महिला सशक्तीकरण का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जायेगा।[34]

महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका:

शिक्षा लोगों को उनके अंधकार से जागृत करने का प्रयास करती है ताकि वे अपनी जीवन। अब, शिक्षा की आवश्यकता केवल पुरुषों के लिए ही नहीं, बल्कि महिलाओं के लिए भी है,। शिक्षा प्रणाली को महिलाओं के समावेशी विकास का मार्ग खोजना चाहिए।

शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के आयाम:

शिक्षा महिलाओं की मुक्ति को बहुविध तरीकों से सुगम बनाती है। यह महिलाओं को इस प्रकार सुसज्जित करती है कि उन्हें अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए दिशा–निर्देश मिल सकें। आइए इसके विभिन्न आयामों पर नजर डालें।

सार्वजनिक मामलों में भागीदारी:

शिक्षा महिलाओं को सार्वजनिक मामलों में सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर देती है। यह उन्हें ऐसा स्थान प्रदान करती है जहाँ न केवल नागरिक और राजनीतिक बल्कि आर्थिक, सांस्कृतिक भागीदारी भी सुनिश्चित होती है। ज्ञान की शक्ति किसी भी प्रकार के शोषण का विरोध करने के लिए उनमें आत्मविश्वास को मजबूत करेगी। महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण उनके आत्म–जागरूकता पर निर्भर करता है। यह उन्हें अपने व्यक्तिगत और राजनीतिक जीवन में महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मदद कर सकता है। उनके सशक्तिकरण में मतदान का अधिकार, चुनाव लड़ने का अधिकार, सार्वजनिक मामलों में प्रचारक के रूप में उनकी भूमिका शामिल है। यह स्थानीय स्वशासन में उनकी भागीदारी भी ला सकता है[35]।

सामाजिक उत्थान:

शिक्षा में महिलाओं के सामाजिक उत्थान में भी मदद करने की क्षमता है। यह देश के सामाजिक–आर्थिक विकास में उत्प्रेरक की भूमिका निभाती है और गरीबी, अज्ञानता और बहिष्कार को कम करते हुए मानव विकास के एक गहन और सामंजस्यपूर्ण रूप के लिए उपलब्ध प्रमुख साधनों में से एक है। शिक्षा, जो एक पेशेवर, शोध–आधारित, करियर–उन्मुख भविष्य के लिए एक प्रशिक्षण आधार है, का सामाजिक परिवर्तन लाने और लोकतंत्र की सफलता सुनिश्चित

करने के एक संभावित साधन के रूप में सम्मान किया जाना चाहिए[36]। यह तर्क दिया जाता है कि यह महिलाओं के विरुद्ध सभी प्रकार की हिंसा से मुक्त वातावरण को सुगम बना सकता है और उच्चतम नीतिगत स्तरों पर महिलाओं की भागीदारी और पर्याप्त प्रतिनिधित्व भी सुनिश्चित कर सकता है। निर्णय लेने के स्तर पर महिलाओं की बढ़ी हुई भागीदारी को उनके विकास और सशक्तिकरण में तभी सहायक माना जा सकता है जब ऐसी भागीदारी उन्हें उत्पादन के कारकों, संसाधनों तक पहुँच और लाभों के वितरण पर अधिक नियंत्रण प्राप्त करने में सक्षम बनाए[37]।

वित्तीय स्वतंत्रता:

शिक्षा न केवल महिलाओं को उनकी सामाजिक स्थिति में बल्कि उनकी वित्तीय क्षमता में भी सशक्त बनाती है। यह उनकी वित्तीय साक्षरता सुनिश्चित करके उनकी ऋण योग्यता का निर्माण करती है। अच्छी शैक्षिक स्थिति वाली महिलाओं के पास बहुत मजबूत वित्तीय योजना होती है[38]। महिलाओं को न्याय और समानता प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए वित्तीय स्वतंत्रता एक आवश्यक शर्त है, क्योंकि आर्थिक मजबूती के बिना, महिलाएं अपने अधिकारों और हकदारियों का प्रयोग नहीं कर सकतीं[39]। वित्तीय साक्षरता महिलाओं को न केवल घर के लिए, बल्कि समाज और राज्य के लिए भी वित्तीय योजना बनाने में विशेषज्ञता प्रदान करती है। महिलाओं की आर्थिक क्षमता संसाधनों, एजेंसी और उपलब्धियों पर उनके नियंत्रण के माध्यम से निर्धारित की जा सकती है। महिलाओं की सूक्ष्म–वित्त सेवाओं तक पहुँच भी उनकी वित्तीय स्वतंत्रता का निर्धारक है। यह उनकी क्रय शक्ति के विकास में भी मदद कर सकती है।

शिक्षा में असमानता:

- इन जिलों में, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, लड़कियों की साक्षरता दर पुरुषों की तुलना में काफी कम है। 2011 की जनगणना के अनुसार, चंदौली में महिला साक्षरता दर 60. 35 प्रति”ात थी, जबकि पुरुष साक्षरता दर 81.72 प्रति”ात थी। यह अंतर हालांकि कम हो रहा है, लेकिन अभी भी कायम है।
- कुछ शोधों में यह पाया गया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की उच्च शिक्षा में भागीदारी अभी भी कम है, खासकर अनुसूचित जाति की महिलाओं की।
- 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित विषयों में लड़कियों का नामांकन लड़कों की तुलना में कम है।

मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरणः

शिक्षा में लोगों को मनोवैज्ञानिक रूप से सशक्त बनाने की क्षमता है ताकि वे अपनी व्यक्तिगत समस्याओं से निपट सकें। मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण आत्म–सम्मान और आत्म–प्रभावकारिता पर निर्भर करता हैं[40]। यह महिलाओं को सामूहिक रूप से संगठित होने और अपने अलगाव, विखंडन और परमाणुकरण को कम करने में सक्षम बनाता है। जब महिलाएँ शैक्षणिक संस्थानों, राजनीतिक दलों या निर्णय लेने वाली संस्थाओं में शामिल होती हैंय श्वेत वर्ण की नौकरियाँ करती हैं, निर्णय लेती हैं और विभिन्न स्थानों की यात्रा करती हैंय जमीन और संपत्ति पर कब्जा करके, वे मनोवैज्ञानिक रूप से सशक्त महसूस करते हैं और अपना आत्मविश्वास बढ़ाते हैं, अपने आत्म–मूल्य को पहचानते हैं और अपनी आय और शरीर पर नियंत्रण रखते हैं[40]।

राजनीतिक विकासः

शिक्षा महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण में सहायक होती है। शासन संरचनाओं के सभी स्तरों पर महिलाओं की भागीदारी महिलाओं के वास्तविक सशक्तिकरण के लिए इस समय की सर्वोच्च आवश्यकता है। सरकारी क्षेत्रों और सार्वजनिक नीति एवं बहस के गलियारों में अपनी आवाज सुने बिना, हम जवाबदेही के अधिकार से वंचित हैं – जो शासित लोगों का एक बुनियादी ढाँचा है[41]। सालिगोदार (2007)[42] ने सही ही कहा है कि, "वास्तव में महिला सशक्तिकरण का अर्थ स्वयं को सशक्त बनाना है न कि पुरुषों पर हावी होना"[40]। इस अर्थ में, महिलाओं का राजनीतिक विकास उन्हें अस्वतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त करता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो लोगों में शक्ति (अर्थात, कार्यान्वयन की क्षमता) को बढ़ावा देती है, जिसका उपयोग वे अपने जीवन, अपने समुदायों और अपने समाज में उन मुद्दों पर कार्य करके कर सकते हैं जिन्हें वे महत्वपूर्ण मानते हैं[40]।

दुनिया भर के कई देशों के लिए सतत विकास की प्रक्रिया में महिलाओं को सशक्त बनाना एक केंद्रीय मुद्दे के रूप में देखा जाता है। दुनिया भर में, सरकारें और विभिन्न संगठन महिला सशक्तिकरण को बढ़ाने के लिए विभिन्न हस्तक्षेपों को लागू करने का प्रयास करते हैं, जैसे कि सूक्ष्म वित्त सेवाओं से लेकर सतत विकास और मानवाधिकारों को बढ़ावा देने तक की पहुँच प्रदान करना[43]। कोई भी विकास गतिविधि केवल पुरुषों और महिलाओं दोनों के आपसी सहयोग और सक्रिय भागीदारी से ही प्राप्त की जा सकती है। महिला सशक्तिकरण एक विश्वास–मध्यस्थ प्रक्रिया है जिसमें विशुद्ध रूप से वस्तुनिष्ठ प्रकृति की सामाजिक परिस्थितियों

का प्रभाव, जैसे कि ज्ञान अर्थव्यवस्था की ताकत, मुक्तिदायी विश्वासों को पोषित करने की उनकी प्रवृत्ति द्वारा मध्यस्थता की जाती है।

महिला शिक्षा के महत्व को समझना :–

महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए शिक्षा वास्तव मे सबसे महत्वपूर्ण संघटक है। प्रस्तुत अध्ययन का उददेश्य है कि किस प्रकार शिक्षा महिलाओं के सशक्तिकरण में सहायक है। या शिक्षा का क्या महत्व है। शिक्षा के द्वारा ही महिलाओं में तेजी से बदलती हुई विश्व की वास्तविकताओं को समझने के लिए आवश्यक विष्लेशणात्मक कौशल प्राप्त होगा जो उन्हें अपमान पूर्ण और मानवीय स्थितियों का विरोध करने का विश्वास और ताकत प्रदान करेगा।

शिक्षा एवं सशक्तिकरण के सहसम्बन्ध को ज्ञात करना :–

प्रस्तुत अध्ययन में यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि शिक्षा और सशक्तिकरण में क्या सहसम्बन्ध है? शिक्षा महिलाओं को पितृसत्तात्मक ज्ञान, नियमों, मूल्यों, व्यवहार पद्धतियों को चुनौती देने में मदद करती है। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए शिक्षा सामूहिक कार्यवाही और चिन्तन की एक अनवरत जारी रहने वाली प्रकिया है।

महिलाओं की परिस्थिति में हो रहे परिवर्तनों पर शिक्षा के प्रभाव को समझनाः –

अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि महिलाओं की परिवर्तित परिस्थिति पर शिक्षा का किस प्रकार प्रभाव पड़ा है? सशक्तिकरण में शिक्षा का स्थान महत्वपूर्ण हैं। बिना शिक्षा के महिलाओं की परिस्थिति में सकारात्मक परिवर्तन असम्भव है। शिक्षा के माध्यम से महिलाओं में जागरूकता आयी है, वे अपने बारे में सोचने लगी है, उन्होंने महसूस किया है कि घर से बाहर भी जीवन है महिलाओं में आत्मविश्वास का संचार हुआ है, उनके व्यक्तित्व में निखार आया है। महिलाएं न केवल सामान्य शिक्षा, बल्कि विश्वविद्यालय तथा कॉलेजों में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हो आज महिलाएँ मुख्यमंत्री, राज्यपाल, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति बन रही है, एवरेस्ट पर विजय प्राप्त कर रही हैं, वायु सेना और नौ सेना में अपनी सेवा प्रदान कर रही है।

महिला शिक्षा में आने वाली बाधाएँः–

स्वतन्त्रता के बाद से केन्द्र और राज्य सरकारें विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों के माध्यम से बिना किसी भेदभाव के सभी महिलाओं को शिक्षा की धारा में शामिल करने के लिए निरन्तर प्रयास कर रही है। वर्ष 2001 में समय साक्षरता दर 65.38 प्रतिशत थी तथा पुरुषों और महिलाओं की साक्षरता दर कम 75.85 प्रतिशत तथा 54.16 प्रतिशत थी। 2011 में समग्र साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत थी तथा पुरुषों और महिलाओं की साक्षरता दर क्रमशः 82.14 प्रतिशत तथा

66.46 प्रतिशत थी। यद्यपि पिछले दशकों से महिला साक्षरता में अधिकतम सुधार हुआ है फिर भी महिलाओं का एक बहुत बड़ा भाग आज भी शिक्षा से वंचित है। महिला शिक्षा के मार्ग में निम्नलिखित बाधाएँ है –

1. शिक्षा में महिला और पुरुष के बीच भेदभाव:–

भारत में शिक्षा में महिला और पुरूष के बीच भेदभाव देखने को मिलता है। स्कूलों में लड़कियों की अपेक्षा लड़के ज्यादा प्रवेश लेते हैं और एक निश्चित स्तर तक अपनी शिक्षा पूरी करते हैं। लड़कियाँ घर पर अपनी माताओं का हाथ बटाती है, बाहर काम पर जाती है या अपने छोटे भाई बहनों की रक्षा करती है। विज्ञान और इंजीनियरींग में लड़कियों की अपेक्षा लडके अधिक प्रवेश लेते हैं और लड़कियाँ निचले स्तर के पाठ्यकमों तथा कालेजों में जाती है। विज्ञान, टेक्नोलोजी तथा इंजीनियरींग शिक्षा के क्षेत्र में लड़के तथा लड़कियों के बीच असमान वितरण है।

बाल विवाह:–

अभिभावक बेटियों की पढ़ाई को विवाह पर होने बाले खर्च के साथ जोड़ते है। इसी कारण वे अपनी लड़कियों को उसी स्तर तक पढ़ाते हैं जहाँ वे उनके लिए सुयोग्य वर ढूँढ़ सका छोटी आयु में विवाह होने के कारण लड़कियों को पढ़ाई के अवसर प्राप्त नहीं हो पाते।[44]

2. निर्धनता:–

निर्धनता लडकियों को शिक्षित होने के अवसरों में स्पष्ट रूप से बाधा डालती है। अध्ययन दर्शाते है कि निर्धन परिवारों में लड़कियाँ गृहकार्य पूरा करती है। छोटे बहन भाईयों की देखभाल करती हैं और कृषि कार्यो में अपने माता पिता का हाथ बटाती हैं। उनके पास विद्यालय जानें के लिए समय नहीं बचता। लड़को के कार्य से भिन्न लड़कियों के कार्य को महिलाओं द्वारा किये जाने वाला कार्य समझा जाता है।[45]

3. सामाजिक, आर्थिक पहलू:–

माता पिता की बेटे और बेटियों के समाजीकरण में भेदभाव की मनोवृत्ति दोनों को भूमिका और दायित्व निर्धारित करने में प्रकट होती है। दिल्ली के विशिष्ट विद्यालय में प्रवेश के इच्छुक अभिभावकों पर किये गये एक अध्ययन से पता लगता है कि उन्हें अपने बेटों और बेटियों से भिन्न–भिन्न अपेक्षाएँ होती है। बेटों से प्रायः घर से बाहर के कार्य करने के लिए कहा जाता है जबकि बेटियों से रसोई घर में हाथ बटवाने की आशा की जाती है। माता पिता बेटे की पढ़ाई

को भविष्य में अच्छे रोजगार अवसरों के लिए एक निवेश मानते है जिसके द्वारा उनकी वृद्धावस्था सुरक्षित हो जायेगी।

4. घर से विद्यालय की दूरी:–

अभी भी ऐसे असंख्य बच्चे है जिनके लिए प्राथमिक विद्यालय तक पहुंचना आसान नहीं है। ये समस्या लड़कियों के मामले में उच्चतर प्राथमिक स्तर पर और भी गम्भीर हो जाती है। सर्वेक्षण से पता लगता है कि केवल 37 प्रतिशत ग्रामीण आबादी को निवास स्थान के नजदीक उच्चत्तर प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध है। इसमें से तीन किलोमीटर की सीमा में 48 प्रतिशत बच्चों को एक उच्चतर प्राथमिक विद्यालय उपलब्ध है। 15 प्रतिशत आबादी 3 किलोमीटर से अधिक दूर है। जिन पांच राज्यों में प्रोब सर्वेक्षण हुआ था यहाँ पाया गया कि जिन गांवों में प्राथमिक विद्यालय नहीं हैं वहाँ लड़कियों प्रायः कक्षा पांच के बाद पढ़ाई छोड़ देती है।

महिला शिक्षा की बाधाओं को दूर करने हेतु सुझावः–

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य महिलाओं की शिक्षा मे आ रही विभिन्न बाधाओं को दूर करने के लिए विभिन्न सुझाव प्रस्तुत करना है। शिक्षा के अभाव में महिला सशक्तिकरण असम्भव है। अतः उन बाधाओं को जो महिलाओं की शिक्षा प्राप्ति में बाधक है कैसे दूर किया जाये इस विषय पर अध्ययन में प्रकाश डाला गया है। शिक्षा में लैंगिंक भेदभाव को दूर करना चाहिए तथा बेटे और बेटी की शिक्षा में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए। महिला शिक्षा के लिए स्कूलों की घर से भौगोलिक दूर का कम किया जाना चाहिए। सरकार को महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान देते हुए राष्ट्रीय स्तर पर शैक्षिक विकास कार्यक्रमों को उच्च प्राथमिकता के आधार पर संचालित किया जाना चाहिए। आवासीय कन्या पाठशालाओं की अधिक से अधिक स्थापना की जानी चाहिए। सरकार को निर्धन पिछड़े तथा कमजोर वर्गो में बालिका शिक्षा के प्रति उत्साह जगाने के लिए आर्थिक पिछडेपन को दूर करने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है[46,47]।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि शिक्षा महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण साधन है। बिना शिक्षा के किसी को भी सशक्त नहीं बनाया जा सकता है। महिला शिक्षा में समाज की भूमिका महत्वपूर्ण है। यदि समाज महिलाओं की शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और सहयोगी भावना रखकर अपना योग दान देगा तो शिक्षित महिलाओं में वृद्धि होगी। शिक्षा से ही महिलाओं में आत्म विश्वास, आत्म जागृति एवं अपने अधिकारों तथा सरकार

के द्वारा दिये जाने वाले अवसरों की जानकारी हो सकेगी जिससे वे अपने कौशल का विकास कर सकेगी एवं स्वावलम्बी बनकर अपने महत्वपूर्ण निर्णय स्वयं लेकर एक मजबूत राष्ट्र के निर्माण में सहयोग कर सकेंगी। महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकारते हुए उत्तर प्रदेश सरकार ने कन्या शिक्षा को प्रमुख वरीयता दी है। प्रदेश सरकार यह प्रयास रहा है कि आधी आबादी को शिक्षा के द्वारा इतना सशक्त बनाया जाये कि वह न केवल स्वयं बल्कि समाज को एक नई दिशा व दशा प्रदान कर सके।

References

1. Bhat RA. Role of Education in the Empowement of Women in India. Journal of Education and Practice. 2015;6(10):188-192.
2. Kaur J. Role of Education in Women Empowerment in India. International Journal of Social Science and Economic Research. 2018;3(12):7466-7472.
3. Witte F. Integrating the Subject: Narratives of Emancipation in Regionalism. The European Journal of International Law. 2019;30(1):257-278.
4. Hennink M, Kitti N, Pillinger M, Jayakaran R. Defining empowerment: perspectives from international development organisations. Development in Practice. 2012;22(2):202-215.
5. Mehra R. Women, Empowerment, and Economic Development. The Annals of the American Academy of Political and Social Science. 1997;554:136-149.
6. Bhagat P. Women Empowerment: Role of Meaningful Educational Opportunities. International Journal of Advanced Education and Research. 2017;2(3):131-136.
7. Islam, M.S. & Islam, R. (2012). Emancipation of Women through Education and Economic Freedom: A Feminist Study of Begum Rokeya‟s Utopias. SUST Journal of Social Sciences, 18(4), 11-19.
8. Kabeer N. Gender equality and women's empowerment: a critical analysis of the third Millennium Development Goal. Gender and Development. 2005;13(1):13-24.
9. Ojha PK. Role of education in empowering rural women for sustainable development in India. International Journal of Applied Research. 2016;2(5):773-777.
10. Alexander AC, Welzel C. Empowering Women: The Role of Emancipative Beliefs. European Sociological Review. 2011;27(3):364-384.
11. Anonuevo CM. Women, Education and Empowerment: Pathways towards Autonomy. UNESCO Institute for Education, Germany; c1995.

12 Bailey LE, Graves K. Gender and Education. Review of Research in Education. 2016;40:682-722.

13 श्रीमती विमला मेहता (1979) “एटीट्यूड ऑफ एजूकेटेड वीमेन टूवार्ड्स सोशल इश्यू” ,नेशनल प्रकाशन,

14 श्रीमती आशारानी (1988) “भारतीय नारी : दिशा एवं दशा” नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

15 आसुरानी (1999) “महिला विकास के कार्यक्रम” अरिहन्त पब्लिकेशन जयपुर

16 सुभाष सेतिया (2000) “भारत में नारी समानता” पब्लिकेशन हाउस, भीलवाड़ा

17 रमेशचन्द्र व्यास (2000) “समाज में महिलाओं की स्थिति” आर्या पब्लिकेशन, दिल्ली,

18 डॉ0 सुनील गोयल एवं सुनीता गोयल (2004) “भारतीय समाज में नारी” आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर

19 डॉ0 गोपा जोशी (2006) “भारत में स्त्री असमानता : एक विमर्श” (हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली)

20 डॉ0 रंजना मिश्रा (2007) “भारत में नारीः राजनीतिक परिवर्तन” (कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल)

21 Varsha Tiwari (2024), ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts 5(4), 1728–1734

22 सुश्री सविता त्रिपाठी, (2019) IJRAR March 2019, Volume 6, Issue 1

23 डॉ0 निशा त्यागी (2018), शोध मंथन, ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 5.463 (SJIF)

24 डॉ उमा शर्मा (2025), International Journal of Innovations in Science Engineering and Management, vol. 4, no. 1, pp. 384–391.

25 मिश्र मीरा–सामाजिक परिवर्तन एवं भारतीय नारी

26 सारथी कुमारी (2020), International Journal of Advanced Academic; 2(1): 305-308

27 डॉ0 शेषमणि और सहयोगी (2023), TIJER, ISSN 2349-9249, Volume 10, Issue 5

28 सलोनी कुमारी (2022) JETIR March 2022, Volume 9, Issue 3

29 डॉ. रमेश प्रसाद द्विवेदी (2016), Int. J. Reviews and Research in Social Sci. 4(3):

30 श्रीमती दीपमाला जैतपुर (2022), IJCRT, Volume 10, Issue 6

31 मदन डॉ. जी. आर परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र

32 कविता कुमारी (2025), JETIR, Volume 12, Issue 1

33 डॉ0 गायत्री कुमारी (2018), International Journal of Scientific Research in Science and Technology, Volume 4 | Issue 8 | p: 854-857

34 Bhattacharjee B. Impact of Education on Women Empowerment. EPRA International Journal of Economic and Business Review. 2015;3(10):169-173.

35 Biswal PK. Education-A Tool for Empowering Women. Odisha Review; c2015. p. 52-56.

36 Dominic, B. & Amrita Jothi, C. (2012). Education-A tool of Women Empowerment: Historical study based on Kerala society. International Journal of Scientific and Research Publications, 2(4), 1-4.

37 Gordon R. Girls cannot think as boys do: socializing children through the Zimbabwean school system. In Caroline Sweetman (Eds.), Gender, Education and Training. U.K: Oxfam; c2004. p. 53-58.

38 Jayant A, Rothermund I. Women, Emancipation and Equality. Economic and Political Weekly. 1989;24(30):1722-1723.

39 Kaur P. Education and Women Empowerment. Chetana Education International. 2016;1(1):105-109.

40 Mandal KC. Concept and Types of Women Empowerment. International Forum of Teaching and Studies. 2013;9(2):17-30.

41 Chakraborty R. Women"s Education and Empowerment in Colonial Bengal. In Hans Hägerdal, Essays on Colonial Domination and Asian Agency, Amsterdam University Press; c2009. p. 87-101.

42 Saligoudar U. Gandhi and the emancipation of Indian women. (Unpublished doctoral dissertation), Department of English, Karnatak University; c2007.

43 Korishetti VB. Female education in rural India (Unpublished doctoral dissertation), Department of Sociology, Karnatak University; c1994.

44 Siqueira MT. Social Emancipation and Human Rights. Counterpoints. 2015;500:161-172.

45 Patrinos H. Returns to Education: The Gender Perspective. In Tembon, M. and Lucia Fort (Eds.), Girls" Education in the 21st Century-Gender Equality, Empowerment and Economic Growth, USA: World Bank; c2008. p. 53-64.

46 Tamilselvi S. A Study on Role of Education in Women Empowerment. International Journal of Current Research and Modern Education. 2018;3(2):37-39.

47 Rishi K, Saxena M. Role of women education in women empowerment and laws in India to help promote women education. International Journal of Law. 2017;3(5):79-82.